आत्मानं विद्धि

अंक ०८/जनवरी २०२१/पौष मास/विक्रम संवत-२०७७

मानव भारती- विद्यालयस्य प्रयासः

"ज्योतिर्गमय"

भारतीय- उल्लासस्य आनन्दस्य च महोत्सवः "गणतंत्र-दिवसः"

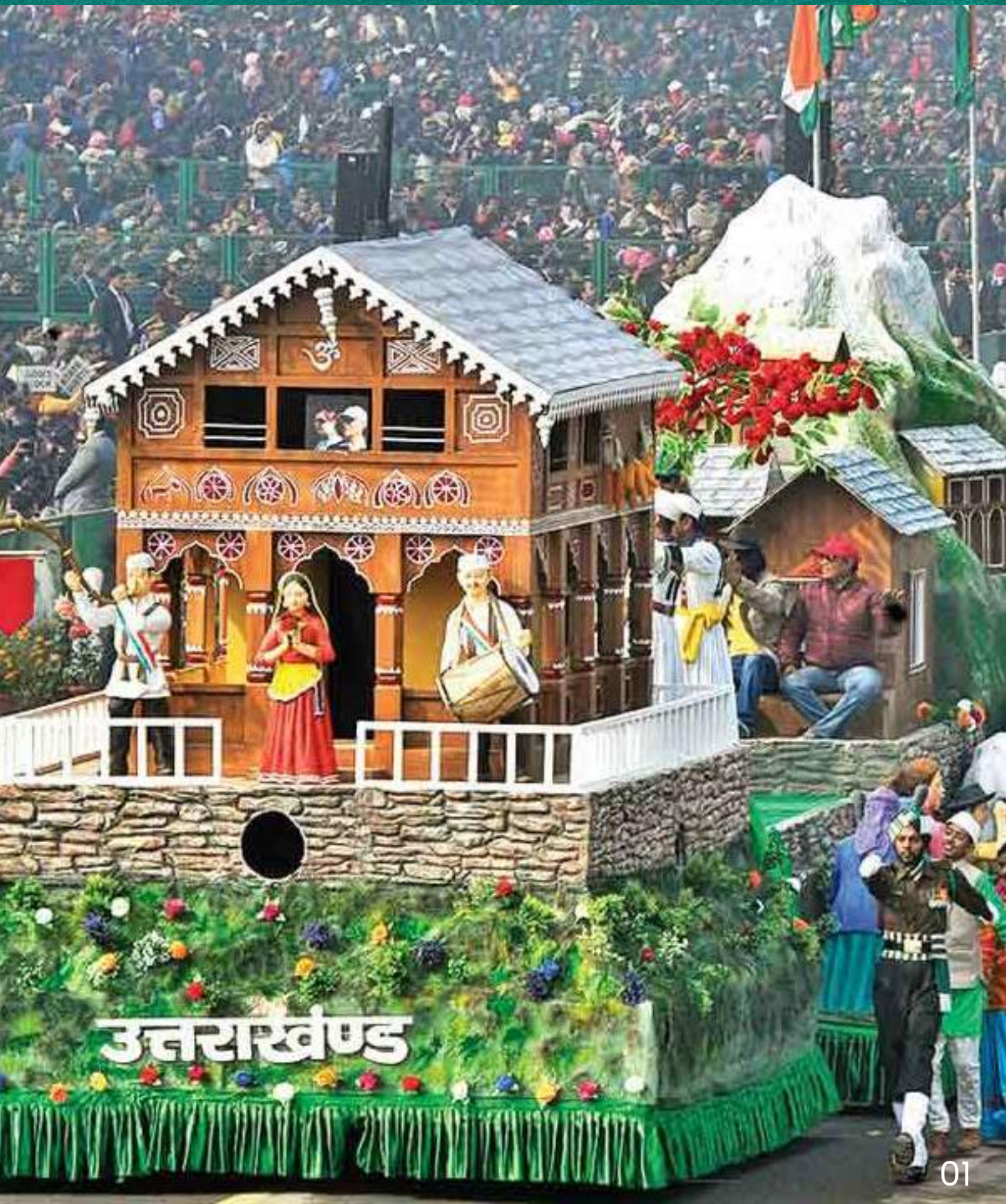

भारतीय- उल्लासस्य आनन्दस्य च महोत्सव: "गणतंत्र-दिवस:"

सम्पादकीयम्

- डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

ज्योतिर्गमय मासिक पत्रिका के सम्मानित सदस्यों, पाठकों, लेखकों तथा सम्मानित शुभचिंतकों को ७२वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।आज हमारा भारतीय उल्लास और आनंद का महोत्सव गणतंत्र दिवस ७२वें शुभ वर्ष में प्रवेश कर रहा है।आप सभी पाठकों को यह अंक समर्पित करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

जब भी २६ जनवरी गणतंत्र दिवस का दिन आता है, संपूर्ण भारतीय जीवन में उल्लास और आनंद का सागर लहराने लगता है। दीपावली, होली तथा विजया दशमी आदि पर्वों की तरह गणतंत्र दिवस भी राष्ट्रीय जीवन को सत्य का आलोक प्रदान करता है। यह करोड़ों भारतीयों के मन मंदिर में दीपावली जलाता है। चेतना का रंग फेंकता है। पौरुष और ओज की महाशक्ति भरता है।

यदि दीपावली नुपुरों की झंकार का और विजयादशमी पौरुष के प्रचंड प्रदर्शन का उत्सव है तो गणतंत्र दिवस भी हताश भारतीय आत्मा की आजाद जिंदगी का वह राष्ट्रीय उत्सव है जिसमें पुरुष और प्रेम की मिलीजुली झंकार सुनाई पड़ती है। देश स्वाधीन तो हुआ 15 अगस्त 1947 ईस्वी को परंतु 26 जनवरी 1950 ईस्वी से भारत का शासन अपने संविधान के अनुसार प्रारंभ हुआ। यह आनंद की बात है कि हमने 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस की पवित्र संज्ञा से स्वयं को विभूषित किया है। हमारा देश इसी दिन पूर्णतः विदेशी शासन से मुक्त हुआ था। 1929 ईस्वी के 26 जनवरी को अखिल भारतीय कांग्रेस का जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अधिवेशन लाहौर में हुआ उसमें कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता को अपना लक्ष्य बनाया। पवित्र रावी के किनारे देश भक्तों ने संकल्प किया कि जब तक पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त नहीं होती वह शांति और चैन की सांस नहीं लेंगे उनकी प्रतिज्ञा सफल हुई।पर अपनी परंपरा से हाथ मिला कर शासन चलाने के लिए नेताओं को एक स्वतंत्र संविधान की आवश्यकता महसूस हुई। 1950 में डॉक्टर अंबेडकर आदि संविधान के विशेषज्ञों ने एक संविधान प्रस्तुत कर दिया। 26 जनवरी 1950 को ही पूर्ण प्रभुत्व संपन्न गणराज्य घोषित हो गया। क्योंकि यह पर्व 1929 के 26 जनवरी को किए गए लाहौर वाले कांग्रेसी अधिवेशन से संबंध रखता है अतः यह एक महान राष्ट्रीय पर्व है।

26 जनवरी 1950 भी पूर्ण स्वाधीनता का प्रतीक है, जो इस पर्व को राष्ट्रीय दृष्टि से और भी अधिक महत्व प्रदान करता है। इस पर्व का अंकुर और फल राष्ट्रीयता की फुलवारी में ही उपजे और फले-फूले अतः इसे राष्ट्रीय पर्व मानने में किसी को भी हिचक नहीं हो सकतीी। इस दिन राष्ट्रपताका के प्रति असंख्य जनता अपनी हृदयों की श्रद्धा अर्पित करती है। देश के बलिदानों की त्याग भरी कहानियां दुहराई जाती है। सर्वत्र धूमधाम के साथ भाषण ध्वज वंदन आदि कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस दिन छात्रों और शिक्षकों में भी एक अपूर्व उत्साह दिखाई देता है। लोकमान्य तिलक और गोखले ने स्वाधीनता का जो दीप जलाया था उसका प्रकाश पाकर भारतीय जनता आनंद की गंगा में डुबकी उतर आती नजर आती है।प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को इतिहास के संकल्प को दोहरा कर हम भारतीय जीवित रहने का प्रमाण देते हैं।

मित्रों स्वाधीनता के फूल गणतंत्र की वाटिका में ही खिलते हैं।26 जनवरी 1950 को नए संविधान के अनुसार शासन का काम शुरू किया। हमने अपने संविधान में प्रत्येक नागरिक को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय पाने का अधिकार दिया है। जातिभेद, लिंगभेद आदि को महत्वहीन समझते हुए हमारे संविधान ने अवसर की समानता प्रत्येक को प्रदान की है। संविधान की सबसे बड़ी महत्ता तो यह है कि इस ने भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य मानकर मानवता का आदर किया है। इस पर्व ने 1929 के लाहौर के कांग्रेसी अधिवेशन से लेकर 1950 तक की इतिहास श्रृंखला को सजीव बना कर हमारी जातीय जीवन को शक्ति दी है। प्रत्येक 26 जनवरी हमें निद्रा से जागरण की ओर ले जाती है। प्रजातंत्र और नागरिक स्वतंत्रता में अटूट संबंध था। गणतंत्र के बिना स्वाधीनता अर्थहीन है और स्वाधीनता के बिना गणतंत्र की कल्पना ही संभव नहीं। यदि हम थोड़ी गहराई से विचार करें तो विदित होगा कि 26 जनवरी संसार की शोषित समाज के संघर्ष को वेग देती है। भारत यूरोप के पैरों तले कुचली हुई एशियाई देशों की जनता का प्रतिनिधित्व करता था और आज भी कर रहा है यह ठीक है कि गणतंत्र दिवस हमारे लिए है, हमारा है परंतु इसके संदेश एशिया के पिछड़े हुए पड़ोसी देशों में भी गूंज रहे हैं।

गणतंत्र दिवस अब और भी महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गोवा जो पुर्तगाली उपनिवेश की चक्की में पीस रहा था आज स्वाधीनता की चांदनी में बांसुरी बजा रहा है। 26 जनवरी राजनीतिक स्वाधीनता का संदेश लेकर आती है। गणतंत्र के महान आदर्शों को हमारे प्राणों में अंकित करने आती है। आज की दुनिया में राजनीति जीवन की राह दिखाती है। जीवन के कई अंगों पर राजनीति ने डेरा डाल रखा है। इस दृष्टि से भी इस राष्ट्रीय पर्व का महत्व बहुत अधिक है।

आज भारत की गणतांत्रिक व्यवस्था को चकनाचूर करने के लिए पाकिस्तान बेचैन है तो चीन भी इसकी और आंखें दिखाता है। एक ओर विश्वबंधुत्व के पाठ पढ़ाए जाते हैं तो दूसरी ओर बमों की तैयारियां होती हैं। हमारे राष्ट्र की स्वाधीनता पर चौमुखी संकट आ पड़ा है। देश के अंदर साढे पांच लाख गांव के निवासी निर्धनता के अभिशाप से कराह रहे हैं और मुट्ठी भर व्यक्ति शान की जिंदगी बिता रहे हैं।प्रत्येक 26 जनवरी को हमारे शासक अपनी वार्षिक आमदनी का कुछ हिस्सा देश को प्रदान करें तो अच्छा हो। प्रत्येक गणतंत्र दिवस पर हम आर्थिक क्षमता का संकल्प लें और कागजी घोड़ों को दौड़ाने के बजाय क्रियाशील गणतंत्र को देश में फलने फूलने का अवसर दें तो गणतंत्र दिवस सदा प्रेरक रहेगा अन्यथा इतिहास की कई अन्य तिथियों की तरह यह भी काल पुरुष के पैरों तले कुचला जाकर निष्प्राण हो जाएगा।

मित्रों हम आम आदमियों के भी अपने राष्ट्र के प्रति कुछ कर्तव्य अवश्य होना चाहिए। हम सब मिलकर संकल्प लें कि अपने भारतवर्ष के गणतंत्र को स्वच्छता और सात्विकता से, कर्मठता और इमानदारी से, स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन और उपयोग से मजबूत और आकर्षक बनाने में सहयोगी बनेंगे।
जय हिन्द वन्दे मातरम्।

-डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

डॉ. बबिता गुप्ता
हिन्दी अध्यापिका

भारत रहे गणतन्त्र ऐसा ,बोधमय गुणगान हो

गणतंत्र दिवस, आज हमारा देश 72 वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। स्वाधीनता के बाद आज ही के दिन 26 जनवरी 1950 को पुरानी शासन पद्धति को हटाकर भारतीय संविधान लागू किया गया। भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, जिसे संविधान सभा के सदस्यों ने अपने अथक परिश्रम सूझबूझ एवं अनेक स्रोतों का अध्ययन करके तैयार किया। इसे लिखने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन का समय लगा। डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा आदि का विशेष योगदान संविधान का निर्माण करने में रहा।

हमारे संविधान के अनुसार भारत राज्यों का एक संघ है, जिसमें अनेक भाषाओं को बोलने वाले अलग-अलग भौगोलिक स्थितियों में रहने वाले अनेक विचारधाराओं को मानने वाले लोगों के कल्याण एवं कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। सन 1950 के बाद प्रतिवर्ष 26 जनवरी को पूरे देश में एवं विदेश के दूतावासों में गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। इस दिन देश के राष्ट्रपति का विशेष राष्ट्र के नाम संदेश दिया जाता है। राजपथ पर आकर्षक सेना की परेड एवं विभिन्न राज्यों की झांकियां निकलती है जिसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं।

सरकारी एवं गैर सरकारी सभी संस्थाओं में तिरंगा झंडा फहराया जाता है। यह दिन हमें स्वतंत्रता संग्राम के वीरों एवं अन्य महापुरुषों के बलिदान एवं उनकी कर्तव्यनिष्ठा को याद दिलाता है। हम सभी उन देश के सपूतों को इस अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं, जिन्होंने स्वराज दिलाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया पूर्ण स्वराज के 72 वर्षों बाद देश ने हर क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की है, पर बहुत सी चुनौतियां और समस्याएं आज भी अपना विकराल रूप हमें दिखा रहे हैं। इनमें गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बेरोजगारी एवं भाषाई क्षेत्रीय धार्मिक वैमनस्य प्रमुख हैं। देश के बाहर एवं देश के अंदर दोनों तरह के शत्रुओं से हमारी सेना एवं प्रशासन लगातार संघर्ष जारी है। आज आवश्यकता है कि हम समाज में चलने वाले देश एवं समाज विरोधी तत्वों को पहचाने उनका बहिष्कार करें और उन्हें समाप्त करने में समाज एवं प्रशासन का सहयोग करें।

भारत रहे गणतन्त्र ऐसा ,बोधमय गुणगान हो
अपना बने जनतन्त्र, मानवमात्र का कल्याण हो।
वन,नदी,झरने खेत बस्ती हिन्द का उत्कर्ष है।
पर्वत, हिमालय की दिशा दक्षिण में भारत वर्ष है।

-डॉ. बबिता गुप्ता

संविधान

दो वर्ष ग्यारह माह अट्ठारह दिनों के मंथन का अमृत वो संविधान हमारा है ।
बाबा साहेब के अथाह संघर्ष मूल्यों से निर्मित वो संविधान हमारा है ।
२९९ महान गुणिजनो के चिंतन से प्रफुल्लित वो संविधान हमारा है ।
३९५ अनुच्छेद,१२ अनुसूचियां ,२२भागों में सृजित वो विधान हमारा है ।
अनेकों स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों से पुष्पित वो संविधान हमारा है ।
संप्रभुतासंम्पन्न,समाजवादी,पंथनिरपेश,लोकतांत्रिक गणराज्य में गर्वित वो संविधान हमारा है ।
"हम भारत के लोगों " की पंक्ति से सुशोभित वो संविधान हमारा है ।
जो निज अधिकारों की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो खुद में भी उपचारों की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो उजियारे(शिक्षा) की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो भाईचारे की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो मानव कल्याण की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो खेत खलिहान की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो स्वच्छंदता की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो समानता की बात करे वो संविधान हमारा है ।
जो छुआछूत को भगाए वो संविधान हमारा है ।
जो हर घर "दीपक" की लौ जलाए वो संविधान हमारा है ...।

समीक्षा गहरवार, कक्षा- 8 बी

गणतंत्र दिवस समारोह में मानवभारती स्कूल देहरादून के बच्चे

26 जनवरी देश का राष्ट्रीय पर्व

प्रांजल गुप्ता

26 जनवरी देश का राष्ट्रीय पर्व है। देश का हर नागरिक चाहे वह किसी धर्म, जाति या संप्रदाय से ताल्लुक रखता हो, इस दिन को राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत होकर मनाता है। इतिहास की बात करें तो इस दिन भारत का संविधान लागू हुआ. भारत को 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से आजादी तो मिल गई थी, लेकिन 26 जनवरी (26 January) 1950 को भारत एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित हुआ। इस दिन राजधानी में राजपथ पर होने वाले मुख्य आयोजन में भारत की सांस्कृतिक झलक के साथ ही सैन्य शक्ति और परंपरागत विरासत की झांकी पेश की जाती है।

स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गांधी जयंती हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं। ये राष्ट्रीय पर्व भारतीय जनमानस को एकता के सूत्र में पिरोते हैं। ये पर्व उन शहीदों देशभक्तों का स्मरण कराते हैं जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता, गौरव और इसकी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए अपने प्राण की आहुति दे दी।: 26 जनवरी 1950 को भारत का अपना संविधान लागू हुआ था। इससे पहले भारत में अंग्रेजों के नियम कायदे ही चल रहे थे।

भारत के संविधान को बनाने में बाबा साहब डॉक्टर भीम राव अंबेडकर का बड़ा स्थान है। गणतंत्र दिवस हम सभी भारतीयों के अंदर हर्ष, उल्लास और नवीन चेतना का संचार करता है। देशवासियों को यह संकल्प लेने के लिए भी प्रेरित करता है कि वो अमर शहीदों के बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे और अपने देश की रक्षा, गौरव और उत्थान के लिए सदा समर्पित रहेंगे।

माह जनवरी छब्बीस को हमसब गणतंत्र मनाते।
और तिरंगे को फहरा कर,गीत ख़ुशी के गाते॥
संविधान आजादी वाला,बच्चो ! इस दिन आया।
इसने दुनिया में भारत को,नव गणतंत्र बनाया॥
क्या करना है और नही क्या ?संविधान बतलाता।
भारत में रहने वालों का,इससे गहरा नाता॥
यह अधिकार हमें देता है,उन्नति करने वाला।
ऊँच-नीच का भेद न करता,कोई यहां मतवाला॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,सब हैं भाई-भाई।
सबसे पहले संविधान ने,बात यही बतलाई॥
इसके बाद बतायी बातें,जन-जन के हित वाली।
पढ़ने में ये सब लगती हैं,बातें बड़ी निराली॥
लेकर शिक्षा कहीं, कभी भी,ऊँचे पद पा सकते।
और बढ़ा व्यापार नियम से,दुनिया में छा सकते॥
देश हमारा, रहें कहीं हम,काम सभी कर सकते।
पंचायत से एम.पी. तक का,हम चुनाव लड़ सकते॥
लेकर सत्ता संविधान से,शक्तिमान हो सकते।
और देश की इस धरती पर,जो चाहे कर सकते॥
लेकिन संविधान को पढ़कर,मानवता को जाने।
अधिकारों के साथ जुड़ें,कर्तव्यों को पहचानो॥

-प्रांजल कक्षा 8 अ

आओ तिरंगा लहराएं आओ तिरंगा फहराएं

आओ तिरंगा लहराएं
आओ तिरंगा फहराएं
अपना गणतंत्र दिवस है आया
झूमे, नाचे, खुशी मनाये
72 वाँ गणतंत्र दिवस खुशी से मनाएंगे
देश पर कुर्बान शहीदों पर श्रद्धा सुमन चढ़ाएंगे।
26 जनवरी 1950 को गणतंत्र लागू हुआ था
प्रथम राष्ट्रपति, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने झंडा फहराया था
मुख्य अतिथि सुकारनो को बुलाया था,
थे जो इंडोनेशियन राष्ट्रपति
भारत के भी थे हितैषी
था वो ऐतिहासिक पल हमारा
जिससे गौरवान्वित था भारत सारा
विश्व के सबसे बड़े संविधान का खिताब हमने पाया है
पूरे विश्व में लोकतंत्र का डंका हमने बजाया है
इसमें बताये नियमों को जीवन में अपनाये
थाम एक दूसरे का हाथ
आगे-आगे कदम बढ़ाएं
आओ तिरंगा लहराएं, आओ तिरंगा फहराएं
अपना गणतंत्र दिवस है आया
झूमे, नाचे, खुशी मनाएं
26 जनवरी को आता हमारा गणतंत्र दिवस,जिसे मिलकर मनाते हैं हम सब हर वर्ष
इस विशेष दिन भारत बना था प्रजातंत्र,
इसके पहले लोग नहीं थे पूर्ण रूप से स्वतंत्र
इसके लिए किये लोगों ने अनगिनत संघर्ष
गणतंत्र प्राप्ति से लोगों को मिला नया उत्कर्ष
गणतंत्र से मिला मतदान का अधिकार
जिससे बनी देशभर में जनता की सरकार
इसलिए दोस्तों तुम गणतंत्र का महत्व समझो
चंद पैसो की खातिर अपना मतदान ना बेचो
क्योंकि यदि ना रहेगा हमारा यह गणतंत्र
तो हमारा भारत देश फिर से हो जाएगा परतंत्र
तो आओ हम सब मिलकर ले प्रतिज्ञा,
मानेंगे संविधान की हर बात, ना करेंगे अवज्ञा।

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम्
मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम्
मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥

- बंकिम चंद्र चटर्जी

सैन्यगीतम्

सादरं समीयताम्
वन्दना विधीयताम्
श्रद्धया स्वमातृभू-समर्चना विधीयताम्॥ सादरम्...
आपदो भवन्तु वा, विद्युतो लसन्तु वा,
आयुधानि भूरिशोऽपि,मस्तके पतन्तु वा,
धीरता न हीयताम्
वीरता विधीयताम्
निर्भयेन चेतसा पदं पुरो निधीयताम्॥ सादरम्...
प्राणदायिनी इयम् त्राणदायिनी इयम् ,
शक्ति- भुक्ति- मुक्तिदा सुधाऽनपायिनी इयम् ,
,एतदीय---वन्दने ,सेवनेऽभिनन्दने,
साभिमानमात्मनो जीवनं प्रदीयताम्॥ सादरम्...

पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(सार्वभौम संस्कृत-प्रचार संस्थानम्, वाराणसी)

सामान्य- ज्ञानम्

1. भारतीय- ध्वज:-त्रिवर्ण:(हरित: श्वेत: केशरवर्ण:)
2.गणतंत्र-दिवस:-26 जनवरी
3.अस्माकं ध्वजे-त्रय:वर्णा: सन्ति
4.त्रिवर्णे ध्वजे शक्त्या: सूचक:-केशरवर्ण:
5. सुषमाया: उर्वरताया: च सूचक:-हरितवर्ण:
6. सात्विकताया: शुचिताया: च द्योतक:-श्वेतवर्ण:
7.प्रगते: न्यायस्य च प्रवर्तकम्-अशोकचक्रम्
8.अशोकस्तम्भ:-सारनाथे (वाराणसी) अस्ति
9.अशोकचक्रे-चतुर्विंशति:(24)अरा: (तीलियां) सन्ति
10.त्रिवर्णध्वजस्य स्वीकरणं-22जुलाई 1947 तमे वर्षे जातम्
11.त्रिवर्ण: ध्वज:-स्वाधीनताया: राष्ट्र- गौरवस्य च प्रतीक:।
जयतु त्रिवर्ण: ध्वज:, जयतु भारतम्॥

भारत-राष्ट्रगौरवम्

बालनारीयुवानो मिलित्वाऽधुना
भारतज्ञानधर्माऽर्थसंवृद्धये।
कायवाणीमनोभिर्यतन्तां सदा
लोकयात्रासुखाऽनन्दसम्पूर्तये॥

(बालक, स्त्री और नवयुवक सभी मिलकर इस समय भारत में ज्ञान,धर्म और अर्थ की अच्छी तरह से वृद्धि के लिए शरीर, वाणी और मन से सदा प्रयत्न करें, जिससे लोकयात्रा (जीवनयात्रा)में सुख एवम् आनन्द की सम्पूर्ति हो सके।)

दिल्ली स्थित लाल किला

खुशियों का त्यौहार गणतंत्र दिवस

अंजलि रावत, 11वीं

हमारा प्यारा गणतंत्र दिवस
यह दिन नहीं यह त्यौहार है,
यह खुशियों का वार है,
यह भारतीयों की गणतंत्रता का त्योहार है।
लागू हुआ इस दिन हमारा संविधान है,
हर प्रकार का जिसमें प्रावधान है।
ना समझो इसे साधारण पुस्तक
यह भारतीयों का ग्रंथ है,
समझ ली हर बात इसकी
तो देश पूर्णतः स्वतंत्र है।
प्रतिवर्ष 26 जनवरी को लौटता यह त्यौहार है,
युवाओं में लहराती नई उम्मीदों की तरंग है
हर जगह देश में छाता तिरंगे का रंग है,
चलना अब हमें लेकर सबको संग है
यह दिन नहीं यह त्यौहार है,
भारतीयों की गणतंत्रता का त्यौहार है।

-अंजलि रावत

कलिका त्रिवेदी, कक्षा 5

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व

26 जनवरी ,1930 से प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी का दिन राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाने लगा । स्वाधीनता के बाद 26 जनवरी ,1950 को भारत गणतन्त्र (रिपब्लिक) बना ।

गणतंत्र दिवस का अर्थ-"जनता द्वारा जनता का शासन"। संविधान में देश का शासन चलाने के नियम है। इस महत्वपूर्ण घटना की याद में गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। 26 जनवरी के दिन नई दिल्ली में प्रभातकाल से ही लोग इंडिया गेट के पास एकत्रित होते हैं ,उत्साह से भरे लोग राष्ट्रपति की सवारी की प्रतीक्षा करते हैं। 26 जनवरी के दिन ही भारत को गणराज्य का सर्वोत्तम दर्जा प्राप्त हुआ। 26 जनवरी के दिन दिल्ली में इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक परेड निकली जाती है।

इस अवसर पर भारत के राष्ट्रपति देश को संबोधित करते है। इस पूरे आयोजन को भारत के राष्ट्रीय चैनल पर प्रकाशित किया जाता है। राष्ट्रपति द्वारा झंडा फहराया जाता है और सभी राष्ट्रगान गाते हैं। 26 जनवरी के दिन वीर चक्र ,परमवीर चक्र जैसे राष्ट्रीय सम्मान वितरित किये जाते हैं।

-अवन्तिका भण्डारी, 7 ब

आज तिरंगा फहराते हैं

प्राची रावत कक्षा 8 बी

आज तिरंगा फहराते हैं अपनी पूरी शान से
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से!!
आजादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी
लाखों लोगों ने प्राणों से कीमत बड़ी चुकाई थी!!
व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया
हम को आपस में लड़ाने की नीति पर उन्होंने काम किया!!
हमने अपना गौरव पाया अपने स्वाभिमान से
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से!!
हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है
उसके आंचल की छाया से छोटा यह संसार है!!
विश्व शांति की चली हवाएं अपने हिंदुस्तान से
हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से!!

-प्राची रावत कक्षा 8 बी

भारत का राष्ट्रगान : जन-गण-मन

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा,द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे ! जय हे !! जय हे !!!
जय ! जय ! जय ! जय हे !!

भारतस्य ऐतिहासिकः दिवसः
"गणतंत्र- दिवसः"
सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय च।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु-
वन्दे मातरम्।।

Manava Bharati India International School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, 7351351098 (Dr. Anantmani Trivedi)